2 जनवरी 2008, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-064 / 2006-08

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

नववर्ष के शुभ अवसर पर सभी पाठकों, लेखकों एवं संवाददाताओं को जैन पथप्रदर्शक परिवार की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ।

वर्ष : 30, अंक : 19
जनवरी (प्रथम), 2008

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल**
प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा**

आजीवन शुल्क : 251 रुपये
वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन का ह्न
28 वाँ राष्ट्रीय अधिवेशन उदयपुर में सम्पन्न

उदयपुर (राज.) : यहाँ श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल उदयपुर द्वारा दिनांक 23 दिसम्बर से 1 जनवरी, 08 तक आयोजित श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान एवं आध्यात्मिक शिक्षण शिविर के अवसर पर 23, 24 एवं 25 दिसम्बर, 07 को अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन का 28 वाँ राष्ट्रीय अधिवेशन अनेक उपलब्धियों के साथ सम्पन्न हुआ।

दिनांक 23-24 दिसम्बर,07 को राष्ट्रीय कार्यकारिणी के पदाधिकारियों, कार्यकारिणी एवं प्रान्तीय पदाधिकारियों की मीटिंग एवं शाखा सदस्यों के साथ ओपन मीटिंग के कुल 8 सत्रों में फैडरेशन द्वारा अभी तक किए गए कार्यों की समीक्षा करते हुए यह बात गंभीरता से महसूस हुई कि वर्तमान परिस्थितियों में आत्मानुभूति और तत्त्वप्रचार के अपने उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु फैडरेशन का कार्य और भी अधिक महत्वपूर्ण हो गया है।

वैज्ञानिक विकास की इस तेज रफ्तार के समय में फैडरेशन को अपने उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए चलायी जा रही विभिन्न गतिविधियों के तरीकों में भी बदलाव लाना चाहिए। इसप्रकार की वैचारिक सहमति परस्पर निर्मित हुई।

इसके अलावा संगठन के स्तर पर भी परिवर्तन की आवश्यकता को महसूस किया गया। यह विचार भी उपस्थित हुआ कि देश में तत्त्वप्रचार के कार्यों में जुटी सभी संस्थाओं के प्रतिनिधियों को भी फैडरेशन में प्रतिनिधित्व देना चाहिए। इस बात को सभी ने हर्षध्वनिपूर्वक स्वीकृत किया।

25 दिसम्बर को सायं 7:30 बजे से आयोजित फैडरेशन के राष्ट्रीय अधिवेशन की सभा की अध्यक्षता राष्ट्रीय उपाध्यक्ष अखिल बंसल, जयपुर ने की। गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के चित्र का अनावरण करके अधिवेशन का उद्घाटन श्रीमान ताराचंदजी फालेजिया सेमारी वालों ने किया। मुख्य अतिथि श्री ताराचंदजी जैन (जिलाध्यक्ष भा.ज.पा.) विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री जयन्तीभाई डी. शाह बोरोवली मुंबई, श्री भागचंदजी

(शेष पृष्ठ -4 पर...)

अगला अधिवेशन तीर्थधाम मंगलायतन में

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन का 29 वाँ राष्ट्रीय अधिवेशन **24 एवं 25 मई, 2008** को तीर्थधाम मंगलायतन में आयोजित होने जा रहा है।

इस अधिवेशन की तैयारी हेतु राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य श्री नवनीत जैन मेरठ, श्री अशोक लुहाड़िया अलीगढ एवं दिल्ली प्रदेश के अध्यक्ष श्री आदीशकुमार जैन दिल्ली को विशेषरूप से मनोनीत किया गया है।

हमारा तो यही मंगल आशीर्वाद है....।

मुमुक्षु समाज के शिरोमणी विद्वान आदरणीय बाबूजी 'युगल'जी से जब फैडरेशन की नवगठित कार्यकारिणी के परामर्शदाता के रूप में स्वीकृति प्रदान करने हेतु महामंत्री श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने चर्चा की तब उन्होंने अपनी सहर्ष स्वीकृति प्रदान की और फैडरेशन को अपना मंगल आशीर्वाद देते हुये कहा कि ''**..हमारा तो यही मंगल आशीर्वाद है कि खूब तत्त्वप्रचार करो।** ''

अनंतभाई ए. सेठ अब फैडरेशन * के परम संरक्षक *

28 वें उदयपुर राष्ट्रीय अधिवेशन के अवसर पर फैडरेशन की केन्द्रिय कार्यकारिणी का पुनर्गठन किया गया।

इस कार्यकारिणी के परम संरक्षक पद पर श्री अनंतभाई ए. सेठ ने अपनी सहर्ष स्वीकृति प्रदान करते हुए कहा कि ''**...फैडरेशन द्वारा नवयुवकों को संस्कारित करने का जो कार्य किया जा रहा है, वह अद्भुत है। इस कार्य में मैं तन-मन-धन से अपना सहयोग प्रदान करूँगा।** ...''

सम्पादकीय – कहानी

चाँटे का काम काँटे से

ह्न पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

एक था बालक, वह चेहरे से तो एकदम मासूम दिखता था, परन्तु था बड़ा नटखट। खट–पट किए बिना उसे चैन ही नहीं पड़ती। बातूनी भी बहुत था। खट्टी–मिठी, बचकानी बातों से लोगों का मन रिझाया करता था। नटखटिया होने से उसका नाम भी 'नटखट' पड़ गया था।

यद्यपि उसकी बहिन उससे बारह वर्ष बड़ी थी, फिर भी वह बात–बात में उससे आये दिन झगड़ता ही रहता। प्रतिकूल प्रसंगों में क्रोध आने पर तो वह गालियाँ भी बकने लगता।

वह पिताजी से तो कुछ डरता भी था; पर बहिन के बड़प्पन की तो उसे बिल्कुल भी पहचान नहीं थी। बहिन ने भी उसे मुँह लगा रखा था, इस कारण बहिन से तो वह बराबरी जैसा ही व्यवहार करता था।

उसके पिता धीर, गंभीर और सहनशील बहुत थे। अत: बेटे का बहिन के साथ होते अभद्र व्यवहार देखते हुए भी वे यह सोचकर चुप रहते कि ह्न ''अभी बच्चा ही तो है, बड़ा होने पर सब ठीक हो जायेगा। इस उम्र में ये बचकानी हरकते अस्वाभाविक नहीं हैं और नटखट होना कोई बुरी बात भी नहीं है, बल्कि यह तो सक्रियता का लक्षण है। थोड़ी दिशा ही तो बदलनी है, दिशा बदलते ही दशा भी बदल जायेगी।''

बहिन का प्रथम तो नारी सुलभ स्नेहिल स्वभाव होने से भाई के प्रति स्नेह होना स्वाभाविक ही था, फिर वह तो इकलौता भाई था। अत: उसके प्रति उसी का क्या, उसे पूरे परिवार का हार्दिक प्रेम प्राप्त था; परन्तु बहिन को उसकी रोज–रोज की खटपट एवं बात–बात में क्रोध करना, लड़ना–झगड़ना पसन्द नहीं था; पर वह करे तो करे भी क्या ?

बहिन काफी समझदार हो गई थी, अत: सोचती थी कि ''जब पापा यह देखते हुए भी चुप रहते हैं और मम्मी बेचारी स्वयं ही उससे परेशान रहती हैं। ऐसी स्थिति में किसी से कुछ कहने में फायदा नहीं है। जिससे कहूँगी, सबका यही उत्तर होगा ह्न ''अभी बच्चा ही तो है, ज्यों–ज्यों बड़ा होगा, सब ठीक हो जायेगा। तूने भी तो उसे मुँह लगा रखा है। तू ऐसा कुछ मत कर, जिससे वह बहक जाये, क्रोधित हो उठते।''

बात भी सही है। भाई के अनुराग में मैं भी तो उसे छेड़ती रहती हूँ। मुझे भी ऐसा नहीं करना चाहिए, जिसकी उस पर प्रतिकूल प्रतिक्रिया हो।

ह्न ह्न ह्न

बेटे का बेटी के प्रति यह अभद्र व्यवहार देखकर माँ को भी बेटे पर क्रोध तो इतना आता कि ह्न वह उसे ऐसे चाँटे लगाये कि उसे भी नानी याद आ जाए; परन्तु माँ तो आखिर माँ ही होती है। वह भी बेचारी पुत्र के प्रेम के वशीभूत होकर क्रोधरूपी जहर का घूँट पी कर रह जाती।

बेटा कितना भी भूलें करे, उदण्डता करे; परन्तु माँ का हाथ उस पर उठता ही नहीं था, क्योंकि उसकी आँखों का तारा, हृदय का प्यारा और जीवन का सहारा एकमात्र वही तो था। वह भी बेटी के बाद लम्बे काल तक प्रतीक्षा कराते–कराते हुआ था।

माँ को न केवल प्रतीक्षा ही करनी पड़ी और भी बहुत कुछ करना पड़ा था। उसके लिए माँ ने न चाहते हुए भी, धार्मिक दृष्टि से मिथ्या मानते हुए भी जिसने जो बताया, वह सब किया। न जाने डॉक्टरों के चक्कर काटे, कितने मन्त्र–तन्त्र करे–कराये और कितने पण्डितों से पूजा–पाठ कराये, कितने ज्योतिषियों के बताये अनुसार ग्रहों की शान्ति के उपाय किए; परन्तु कहीं से कुछ नहीं हुआ।

अन्त में निराश होकर जब वह बैठ गई तब कहीं वर्षो बाद भली होनहार से बच्चे का मुख देखने को मिला। भला, जो बेटा इतनी दुर्लभता से प्राप्त हुआ हो, उसे पीटने को उस माँ के हाथ कैसे उठ सकते हैं ?

पिता की लापरवाही और माँ के जरूरत से ज्यादा किए लाड़–प्यार से बेटे को बिगड़ना तो था ही सो बिगड़ गया। अब तो अड़ोस–पड़ोस से भी शिकायतें आने लगीं।

ह्न ह्न ह्न

'नटखट' बालक का परिवार ऐसे गाँव में रहता था, जहाँ के रास्ते कच्चे, काँटे–कंकरीले थे। गाँव से लगभग एक किलोमीटर दूर पहाड़ी पर ऐसा अतिशयकारी जिनमन्दिर है, जहाँ दर्शनार्थी श्रद्धा–भक्ति से स्वत: खिचे चले आते थे। वहाँ यह परम्परा थी कि दर्शनार्थी पैदल और नंगे पैरों ही जाते।

'नटखट' की माँ छुट्टी के दिन या प्रत्येक अष्टमी–चौदस को नटखट को साथ लेकर ही मन्दिर जाती; क्योंकि वह सोचती कि ह्न ''बचपन से ही उसमें धार्मिक संस्कार पड़ें।

एक दिन माँ–बेटे जिनेन्द्र भगवान के दर्शन के लिए उसी पहाड़ी के मन्दिर जा रहे थे। रास्ते में पड़ा था एक काँटा, जो बेटे के पैर में लग गया। बेटा रोया और जोर–जोर से चिल्लाया ह्न 'माँ ! मेरे पैर में काँटा लग गया है।'

माँ ने एक क्षण रुक कर सोचा ह्न ''बेटे को काँटा तो लग ही गया, मैं क्यों **न चाँटे का काम काँटें से ही कर लूँ ?**''

वह मन ही मन प्रसन्न होकर बोली ह्न ''बेटा ! तू बहिन से लड़ता–झगड़ता है न ! और उसे गालियाँ भी देता है, इसी कारण तेरे पैर में काँटा लगा है।''

''अरे बेटा ! जो बहिन के साथ लड़ाई–झगड़ा करते हैं, उसे ऐसे ही काँटे लगते हैं। यदि तू अभी भी अपना यह व्यवहार नहीं सुधारेगा तो काँटे तो क्या शूल भी चुभ सकते हैं। इसलिए तू अभी ही प्रतिज्ञा कर कि तू बहिन से तो कभी लड़ेगा ही नहीं, अड़ौसी–पड़ौसियों से भी तेरी कभी कोई शिकायत नहीं आएगी।''

बेटे ने कहा ह्न ''यदि ऐसी बात है तो मैं अब किसी से नहीं लड़ूँगा। किसी को गाली भी नहीं दूँगा, फिर तो कभी काँटा नहीं लगेगा न ?''

अपना सोचा हुआ उपाय सफल होता देख माँ को खुशी तो हुई, परन्तु वह यह भी जानती थी कि ह्न ''अव्युत्पन्न अर्थात् अनजान जीवों की बुरी आदतों अथवा पाप प्रवृत्तियों को छुड़ाने के लिए ही **प्रथमानुयोग के पुराण आदि शास्त्रों** में ऐसे कथन किए हैं; परन्तु वास्तविक बात यह है कि काँटे लगने, न लगने से बुरी आदतों के छूटने न छूटने का कोई सम्बन्ध नहीं है।'' फिर भी माँ ने नि:संकोच भाव से कह दिया कि ह्न ''यदि बहिन को गाली नहीं देगा, लड़ेगा–झगड़ेगा नहीं तो काँटा नहीं लगेगा।''

(शेष अगले अंक में...)

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन कल ह्न आज ह्न और कल ह्न

आध्यात्मिक सत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के प्रभावनायोग में एक ऐसा समय आया कि जब सम्पूर्ण भारतवर्ष में इस आध्यात्मिक क्रान्ति के विरुद्ध वातावरण बनाया जाने लगा। बात यहाँ तक पहुँची कि उनके सत्साहित्य को जलाशयों में बहाया जाने लगा, इसकी होलियाँ जलाई जाने लगी।

सम्पूर्ण समाज में खलबली मच गई और समाज के प्रमुख लोगों ने उसके विरुद्ध अपील निकाली। आचार्य श्री विद्यानंदजी ने अपील निकालकर समाज से कहा कि ऐसा करना सर्वथा अनुचित है और यह कार्य तत्काल बंद होना चाहिए। उक्त अपीलों का अनुकूल प्रभाव तो रहा, पर भविष्य में ऐसा न हो इसके लिए एक युवा फैडरेशन की आवश्यकता महसूस की गई।

बंधुवर अखिल बंसल ने अपने स्तर पर जैन युवा फैडरेशन नाम की संस्था का गठन किया और अपने कतिपय सहयोगियों के साथ मिलकर कार्य आरंभ किया। आरम्भिक स्थिति में इस संस्था के वे ही सब कुछ थे। इस संस्था को गति तब मिली जब 17 मई 1978 को पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के पावन सानिध्य में कुरावड़ (राज.) में पंचकल्याणक के अवसर पर इसका प्रथम अधिवेशन सेठ श्री पन्नालालजी गंगवाल की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर **पण्डित बाबूभाई मेहता** ने कहा कि ह्न **''अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन समय की आवश्यकता है और इसका विस्तार देशभर में होना चाहिए।''**

सभा को संबोधित करते हुए **डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल** ने अपने उद्‌बोधन में कहाह्न **''युवकों में जोश के साथ होश भी होना चाहिए। कोई भी संगठन रचनात्मक कार्यक्रमों के आधार पर ही जीवित रह सकता है, मात्र क्रान्तिकारी नारों से नहीं।''**

इस अधिवेशन में श्री पन्नालालजी गंगवाल कलकत्ता को संस्था का संरक्षक तथा डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल को परामर्शदाता बनाया गया।

जैन समाज के सुप्रसिद्ध विद्वान **पण्डित नाथूलालजी शास्त्री** इन्दौर (सम्पादक सन्मति वाणी मासिक) ने अपने पत्र में फैडरेशन के गठन पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए लिखा कि ह्न **'' युवा फैडरेशन की इस देश और समाज के विषम वातावरण में आवश्यकता मैं भी अनुभव कर रहा हूँ। वर्तमान में समाज सुधार और साहित्य सेवा का दायित्व युवा पीढ़ी पर निर्भर है।''**

संसद सदस्य **श्री निर्मलचंद जैन** ने युवा फैडरेशन की स्थापना पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए लिखा कि ह्न **'' युवा वर्ग के खून में जोश होता है उस जोश को सेवा भावना के मार्ग पर मोड़ दिया जाए तो चमत्कार हो सकते हैं। अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन इस चमत्कार को लाने का एक सबल साधन बने ऐसी मेरी अनेकशः शुभकामना है।''**

साहित्य की सुरक्षा में संलग्न युवा फैडरेशन को आशीर्वाद देते हुए **आचार्य श्री जयसागरजी ने लिखा कि ह्न**

''....युवावस्था में तुम लोगों की धार्मिक रुचि देखकर मुझे बहुत खुशी होती है। मैं चाहता हूँ कि सभी नवयुवक धर्म में रुचि लें, स्वाध्याय करें, सदाचार से रहें। इसके लिए तुम लोगों ने युवा फैडरेशन स्थापित कर बहुत अच्छा कार्य किया है। यह फैडरेशन खूब प्रगति करे ऐसा मेरा आशीर्वाद है।....''

- **आचार्य श्री शांतिसागरजी(हस्तिनापुर) ने लिखा कि ह्न**

''.....युवकों में धर्म के प्रति रुचि होना बहुत जरूरी है। इनके द्वारा धर्म की बहुत प्रभावना हो सकती है। इसी में उनकी आत्मा का कल्याण भी है। युवा फैडरेशन इसके लिए बहुत अच्छा काम कर रहा है। पाठशालाएँ खोलना, शिविर लगाना आदि कार्यों से फैडरेशन द्वारा अच्छी प्रभावना हो रही है। युवा फैडरेशन अपने कार्यक्रमों में सफल हो तथा सभी युवक रत्नत्रय मार्ग पर चलें ऐसा मेरा आशीर्वाद है।.....''

- **मुनि श्री विजयसागरजी ने लिखा कि ह्न**

''.....ऐसे समय में आप लोग धर्म में रुचि ले रहे हैं और दूसरे युवकों को भी प्रेरणा देते हैं यह देखकर मुझे बहुत खुशी हुई है। आपका युवा फैडरेशन धर्म की खूब–खूब प्रभावना करे, ऐसा मेरा शुभाशीष है।.....''

इसप्रकार यह जैन युवा फैडरेशन अपने आरंभ काल से ही जिनवाणी की सुरक्षा एवं पूज्य गुरुदेवश्री द्वारा प्रतिपादित तत्त्वज्ञान के प्रचार–प्रसार में संलग्न है और अब एक बार फिर तत्त्वप्रचार के कार्य में तेजी के साथ सक्रिय होने जा रहा है।

महिला प्रकोष्ठ का गठन

28 वें राष्ट्रीय अधिवेशन के अवसर पर अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन के महिला प्रकोष्ठ का गठन किया गया तथा **डॉ.शुद्धात्मप्रभा टडैया, मुम्बई** को इसका प्रभारी बनाया गया है।

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

15 से 20 जनवरी, 08	बदरवास–शिवपुरी	पंचकल्याणक
28 से 30 जनवरी, 08	बावनगजा	मस्तकाभिषेक
1 से 3 फरवरी, 08	मंगलायतन	वार्षिकोत्सव
5 से 11 फरवरी, 08	द्रोणगिरि	पंचकल्याणक

(28 वाँ राष्ट्रीय अधिवेशन, पृष्ठ–1 का शेष ...)

कालिका उदयपुर, श्री आई.एस.जैन मुंबई, श्री सुजानमलजी गदिया उदयपुर, श्री लक्ष्मीलालजी बण्डी उदयपुर मंचासीन थे। विद्वत्वर्ग में डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल जयपुर, पण्डित देवेन्द्रजी बिजौलिया मंगलायतन, पण्डित धनसिंहजी पिड़ावा, पण्डित विपिन शास्त्री (श्योपुर) मुम्बई के अतिरिक्त स्थानीय विद्वान भी मंचासीन थे।

राजस्थान प्रान्त के उपाध्यक्ष पण्डित अजित शास्त्री अलवर ने मंगलाचरण पूर्वक कार्यक्रम की शुरुआत की। पण्डित महावीर प्रसादजी शास्त्री, उदयपुर (प्रदेश उपाध्यक्ष राज.प्रान्त) ने सभी मंचासीन अतिथियों की स्वागत विधि के साथ–साथ स्वागत भाषण प्रस्तुत किया।

राजस्थान प्रान्त में फैडरेशन की गतिविधियों की रिपोर्ट पण्डित अजित कुमार शास्त्री अलवर ने प्रस्तुत की इसके अतिरिक्त श्रीमती किरण जैन जिलाध्यक्ष महिला प्रकोष्ठ उदयपुर ने उदयपुर जिले की महिला शाखाओं की रिपोर्ट, श्रीमती आशा पांड्या ने मुमुक्षु मण्डल उदयपुर शाखा की रिपोर्ट प्रस्तुत की।

फैडरेशन की राष्ट्रीय कार्यकारिणी में पहली बार महिला प्रकोष्ठ का गठन भी किया गया। महिला प्रकोष्ठ की प्रथम राष्ट्रीय प्रभारी डॉ.शुद्धात्मप्रभा टड़ैया ने बालकों में संस्कारों हेतु पाठशालाओं के संचालन हेतु महिला शक्ति का विशेषरूप से आह्वान करते हुए कहा कि महिला अपने सभी रूपों (बेटी–बहू–पत्नी) में समाज का नेतृत्त्व करती हैं; अत: उन्हें आगे आकर विशेषरूप से जिम्मेदारी पूर्वक पाठशाला संचालन का कार्य सम्हालना चाहिए।

फैडरेशन के राष्ट्रीय मंत्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने फैडरेशन को नई ऊँचाइयों पर ले जाने के लिए युवकों का आह्वान किया।

जो शाखायें अधिवेशन में नहीं आ सकीं, उनके द्वारा प्रेषित रिपोर्ट को राष्ट्रीय संगठन मंत्री पण्डित पीयूषकुमारजी शास्त्री ने प्रस्तुत किया।

इसके पश्चात् अधिवेशन सभा का संचालन कर रहे फैडरेशन के राष्ट्रीय महामंत्री परमात्मप्रकाश भारिल्ल द्वारा फैडरेशन के आगामी कार्यक्रमों की घोषणा की गई। (जिसे आगे अविकल प्रकाशित किया जा रहा है)

सभा की अध्यक्षता कर रहे फैडरेशन के राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष अखिल बंसल ने फैडरेशन के निवर्तमान अध्यक्ष ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री के प्रति धन्यवाद प्रस्ताव रखा, जिसे सभा ने करतल ध्वनि से स्वीकृत किया। तत्पश्चात् **निर्देशक मण्डल द्वारा मनोनीत फैडरेशन के नवीन राष्ट्रीय अध्यक्ष के रूप में श्री विपुल कान्तिभाई मोटानी मुम्बई एवं राष्ट्रीय महामंत्री के रूप में पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल की नियुक्ति की घोषणा की तत्पश्चात् महामंत्री श्री परमात्मप्रकाश भारिल्ल द्वारा पूरी कार्यकारिणी की घोषणा की गई।** (जिसे आगे प्रकाशित किया जा रहा है।)

अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में फैडरेशन के संस्थापक श्री अखिल बंसल ने उन तात्कालिक परिस्थितियों की चर्चा की, जिन कारणों से फैडरेशन की स्थापना की गई। आपने अधिकाधिक संख्या में युवा वर्ग को फैडरेशन से जुड़ने की अपील की।

डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल ने अपने उद्बोधन में समाज की तत्कालीन एवं वर्तमान स्थितियों का जिक्र करते हुए फैडरेशन द्वारा किये गये कार्यों की प्रशंसा की तथा वर्तमान संदर्भों में फैडरेशन की और अधिक सक्रिय भूमिका पर बल दिया। आपने कहा कि कोई भी संस्था की उम्र लम्बी तब तक नहीं हो सकती है जब तक वह अपनी गतिविधियों को निरन्तरता प्रदान नहीं करे। हमारे युवा फैडरेशन की प्रमुख विशेषता है कि वह समाज में युवाओं के साथ–साथ बच्चों में धर्म के संस्कार को देने के कार्य के साथ ही समाज के शैक्षणिक, नैतिक उत्थान का कार्य भी निरंतर करता है। फैडरेशन के द्वारा किसी के भी विरुद्ध किसी भी प्रकार के आन्दोलन, धरने, प्रदर्शन, आदि कार्य नहीं किये जाते हैं; अपितु युवाओं में व्याप्त अज्ञान, असदाचार, कुरीतियों को मिटाने का कार्य किया जाता है।

सभा को मुख्य अतिथि श्रीमान ताराचंदजी जैन (जिलाध्यक्ष भा.ज.पा.) एवं आई.एस.जैन मुम्बई ने भी संबोधित किया।

अंत में फैडरेशन के राष्ट्रीय गीत 'मैं ज्ञानानन्द स्वभावी हूँ' के गान पूर्वक अधिवेशन का समापन हुआ। अधिवेशन में उपस्थित सभी शाखाओं को मुमुक्षु मण्डल उदयपुर द्वारा मेमेन्टो प्रदान किये गये। ●

ब्र. जतीशचन्द शास्त्री की सेवाओं के लिये कृतज्ञता ज्ञापित

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन के निवर्तमान अध्यक्ष ब्र. जतीशचन्द शास्त्री की सुदीर्घकालीन सेवाओं के लिये अधिवेशन में उन्हें याद किया गया। अधिवेशन की अध्यक्षता कर रहे संस्था के वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री अखिल बंसल ने निम्न प्रस्ताव के माध्यम से कृतज्ञता ज्ञापित की, जिसका अनुमोदन महामंत्री श्री परमात्मप्रकाश भारिल्ल ने किया। अधिवेशन में पधारे फैडरेशन के कार्यकर्ताओं ने करतल ध्वनि से प्रस्ताव का समर्थन किया।

प्रस्ताव – अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन के निवर्तमान अध्यक्ष ब्र.जतीशचन्द शास्त्री ने चांदखेडी अधिवेशन के समय 1979 में फैडरेशन के तृतीय अध्यक्ष के रूप में संस्था की बागडोर सम्हाली थी और तब से लगातार आज तक 28 वर्ष के सुदीर्घ समय में तन, मन, धन से दिन–रात श्रम करते हुये उन्होंने संस्था को नई ऊँचाईयाँ प्रदान की।

आपके सबल नेतृत्व में यह संगठन न केवल देश में अपितु सम्पूर्ण विश्व में मुमुक्षु समाज के तरुण वर्ग के संगठन के रूप में विख्यात हुआ है। संस्था में युवक–युवतियों ने बढ चढकर हिस्सा लिया और यह अपने सृजनात्मक उद्देश्यों के लिये पहचाना जाने लगा।

स्वास्थ्य, समय एवं उम्र की मर्यादाओं के कारण दिये गये आपके त्यागपत्र को निर्देशक मण्डल ने स्वीकार कर लिया। अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन की कार्यकारिणी आपकी दीर्घकालीन सेवाओं के लिये आपको हमेशा याद करेगी। हम सभी आशा करते हैं कि आपका मार्गदर्शन एवं सहयोग संस्था को निरन्तर प्राप्त होता रहेगा।

आप दीर्घजीवी हों ह्न ऐसी कामना है।

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन की नवगठित राष्ट्रीय कार्यकारिणी

परम संरक्षक ह्न	श्री अनंतभाई ए. सेठ, मुम्बई
संरक्षक ह्न	श्री पूनमचंदजी सेठी, दिल्ली
	श्री अजितभाई जैन(धारीवाल इ. लि) बडौदा
परामर्शदाता ह्न	बाबूजी जुगलकिशोरजी 'युगल', कोटा
	श्री दादा विमलचंदजी झांझरी, उज्जैन
	श्री वसन्तभाई एम. दोशी, मुम्बई
	ब्र. धन्यकुमारजी बेलोकर, गजपंथा
	ब्र. श्री जतीशचंदजी शास्त्री, दिल्ली
	डॉ. उत्तमचंदजी जैन, सिवनी
	पण्डित ज्ञानचंदजी जैन विदिशा
	श्री पवनकुमारजी जैन अलीगढ़
	श्री अजितप्रसादजी जैन, दिल्ली
	ब्र.अभिनन्दनकुमारजी शास्त्री, खनियांधाना
	पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री, देवलाली
राष्ट्रीय अध्यक्ष ह्न	श्री विपुल कान्तीभाई मोटाणी, मुम्बई
राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष ह्न	श्री अखिल बंसल, जयपुर
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष ह्न	श्री विपिन शास्त्री, मुम्बई
	पण्डित प्रदीपकुमार झांझरी, उज्जैन
	श्री विमलकुमार जैन, (नीरु केमिकल्स) दिल्ली
	श्री महिपाल शाह, बाँसवाड़ा
	श्री प्रेमचंद बजाज, कोटा
	पण्डित मुकेश 'तन्मय' शास्त्री, विदिशा
	श्री अध्यात्मप्रकाश भारिल्ल, मुम्बई
	श्री सतीश ए. मेहता, अहमदाबाद
	श्री स्वप्निल पवनकुमार जैन, अलीगढ़
राष्ट्रीय महामंत्री ह्न	श्री परमात्मप्रकाश भारिल्ल, मुम्बई
राष्ट्रीय मंत्री ह्न	श्री शुद्धात्मप्रकाश भारिल्ल, जयपुर
संगठन मंत्री ह्न	पण्डित पीयूषकुमार शास्त्री, जयपुर
प्रचार मंत्री ह्न	पण्डित धर्मेन्द्रकुमार शास्त्री, जयपुर
कोषाध्यक्ष ह्न	श्री प्रदीपकुमार चौधरी, किशनगढ़
कार्यकारिणी सदस्य ह्न	पण्डित राकेशकुमार शास्त्री, अलीगढ़
	पण्डित अशोककुमार लुहाड़िया, अलीगढ
	श्री जीतूभाई नागरदास मोदी, सोनगढ़
	श्री आदिनाथ नखाते, नागपुर
	पण्डित देवेन्द्रकुमार जैन, बिजौलियाँ
	श्री चिन्मय जैन, कोटा
	श्री अभयकुमार टडैया, ललितपुर
	श्री मलूक चन्द जैन, विदिशा
	श्री सुभाष कोटड़िया, वापी
	श्री प्रदीप खारा, मुम्बई
	श्री नितिन सी. शाह, मुम्बई
	श्री अवनीश मोदी, मुम्बई
	श्री नरेशकुमार लुहाड़िया, दिल्ली
	श्री चम्पालाल भण्डारी, बैंगलोर
	श्री सुनील जैनापुरे, राजकोट
	डॉ. शुद्धात्मप्रभा टड़ैया, मुंबई(प्र. महिला प्रकोष्ठ)
	श्री नवनीत जैन, मेरठ (प्रभारी उत्तरप्रदेश)
	श्री जिनेन्द्र शास्त्री उदयपुर (प्रभारी राजस्थान)
	श्री महावीर पाटील, सांगली(प्रभारी महाराष्ट्र)

युवा फैडरेशन के अधिवेशन एक नजर में

पहला ह्न	कुरावड़ (राज.)	17 मई 1978
दूसरा ह्न	चाँदखेड़ी (राज.)	21 मार्च 1979
तीसरा ह्न	बम्बई (महा.)	13 अप्रैल 1980
चौथा ह्न	फिरोजाबाद (उ.प्र.)	19 जून 1981
पाँचवा ह्न	इन्दौर (म.प्र.)	16 जून 1982
छठवाँ ह्न	भीलवाड़ा (राज.)	16 जून 1983
सातवाँ ह्न	भिण्ड (म.प्र.)	08 जून 1984
आठवाँ ह्न	मुरार–ग्वालियर (म.प्र.)	31 दिसम्बर 1984
नौवाँ ह्न	बीना (म.प्र.)	
दसवाँ ह्न	मलाड़–मुम्बई (महा.)	30 दिसम्बर 1986
ग्यारहवाँ ह्न	नागपुर (महा.)	30 दिसम्बर 1987
बारहवाँ ह्न	सनावद (म.प्र.)	29 दिसम्बर 1988
तेरहवाँ ह्न	भोपाल (म.प्र.)	15 दिसम्बर 1989
चौदहवाँ ह्न	जयपुर (राज.)	
पन्द्रहवाँ ह्न	देवलाली (महा.)	29 दिसम्बर 1991
सोलहवाँ ह्न	देवलाली (महा.)	27 दिसम्बर 1992
सत्रहवाँ ह्न	जयपुर (राज.)	29 दिसम्बर 1993
अठारहवाँ ह्न	बेलगांव (कर्नाटक)	31 दिसम्बर 1994
उन्नीसवाँ ह्न	सोलापुर (महा.)	01 जनवरी 1996
बीसवाँ ह्न	फिरोजाबाद (उ.प्र.)	31 दिसम्बर 1996
इक्कीसवाँ ह्न	जयपुर (राज.)	30 दिसम्बर 1997
बाइसवाँ ह्न	जयपुर (राज.)	28 दिसम्बर 1998
तेइसवाँ ह्न	मेरठ (उ.प्र.)	31 दिसम्बर 1999
चौबीसवाँ ह्न	देवलाली (महा.)	31 दिसम्बर 2000
पच्चीसवाँ ह्न	कुरावड़ (राज.)	27 दिसम्बर 2001
छब्बीसवाँ ह्न	जयपुर (राज.)	15 अक्टूबर 2002
सत्ताइसवाँ ह्न	द्रोणगिर (म.प्र.)	28 दिसम्बर 2003
अठ्ठाइसवाँ ह्न	उदयपुर (राज.)	25 दिसम्बर 2007

तत्त्वचर्चा

छहढाला का सार 19

– डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे .....)

अब बोधिदुर्लभ और धर्मभावना की चर्चा करते हैं ह्न

सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र ह्न इन तीनों को रत्नत्रय धर्म कहते हैं और इन तीनों का मिलकर एक नाम बोधि भी है। इसप्रकार बोधि और धर्म शब्द एकार्थवाची ही हैं। इस कारण धर्मभावना को बोधि भावना भी कह सकते हैं और बोधिदुर्लभ भावना को धर्मदुर्लभ भावना भी कह सकते हैं। तात्पर्य यह है कि बोधिदुर्लभ भावना में रत्नत्रयरूप धर्म की दुर्लभता बताई गई है और धर्मभावना में रत्नधर्म की आराधना की बात कही गई है।

छहढाला में दोनों भावनाओं का स्वरूप इसप्रकार दिया गया है ह्न

अन्तिम ग्रीवक लौं की हद, पायो अनन्त बिरियाँपद।
पर सम्यग्ज्ञान न लाधौ, दुर्लभ निज में मुनि साधौ।।
जे भावमोह तैं न्यारे, दृग ज्ञान व्रतादिक सारे।
सो धर्म जबै जिय धारै, तब ही सुख अचल निहारै।।

यह जीव द्रव्यलिंग धारण करके अनन्त बार अन्तिम ग्रैवेयक तक गया; किन्तु सम्यग्ज्ञान की प्राप्ति नहीं की। इस दुर्लभ सम्यग्ज्ञान को मुनिराज निजात्मा के आश्रय से साधते हैं।

मोह से भिन्न दर्शन, ज्ञान और चारित्र रूप जितने भी निर्मलभाव हैं; वे सभी धर्म हैं। जब यह जीव उक्त धर्म को धारण करता है; तब कभी चलायमान न होनेवाला मोक्ष सुख प्राप्त करता है।

यद्यपि दौलतरामजी के छन्द में **'पर सम्यग्ज्ञान न लाधो'** लिखा है; पर उसका भाव रत्नत्रय की प्राप्ति नहीं हुई ह्न यही है। 'बोध' शब्द का अर्थ होता है ज्ञान और 'बोधि' शब्द का अर्थ होता है रत्नत्रय अर्थात् सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र। भावना का नाम 'बोधदुर्लभ' नहीं; 'बोधिदुर्लभ' है; इसलिये यहाँ सम्यग्ज्ञान शब्द में सम्यग्ज्ञान के अविनाभावी सम्यग्दर्शन और कम से कम अंशरूप सम्यक्चारित्र लेना ही अभीष्ट है।

इसप्रकार इन बारह भावनाओं की चर्चा करने के उपरान्त अन्त में दौलतरामजी लिखते हैं ह्न

सो धर्म मुनिन करि धरिये, तिनकी करतूति उचरिये।
ताको सुनिये भवि प्रानी, अपनी अनुभूति पिछानी।।

वह रत्नत्रयरूप धर्म मुनियों के द्वारा धारण किया जाता है। अत: अब उनके कर्तृत्त्व की बात करते हैं। हे भव्यप्राणी ! अनुभूतिस्वरूप मुनिधर्म के स्वरूप को तुम ध्यान से सुनो और उसे अपनी अनुभूति से प्रमाणित करो।

इसप्रकार बारह भावनाओं की चर्चा से विराम लेते हैं और अब आगामी ढाल में सकलचारित्र अर्थात् मुनिधर्म के स्वरूप पर विचार करेंगे।●

छठवाँ प्रवचन

तीन भुवन में सार, वीतराग–विज्ञानता।
शिवस्वरूप शिवकार, नमहूँ त्रियोग सम्हारिकै।।

अब इस छठवीं ढाल में मुनिधर्म का स्वरूप समझाते हैं। यह मुनिधर्म इतना महान है कि इसे धारण किये बिना न तो आजतक कोई अरहंत–सिद्ध पद को प्राप्त हुआ है और न कभी होगा।

एक श्रावक के लिये मुनिधर्म पर चर्चा करना एक ऐसा दुस्तर कार्य है कि जिसे संपन्न करने के लिये अत्यन्त सावधानी की आवश्यकता है। यह दुस्तर कार्य तो है, पर असंभव नहीं है; क्योंकि जिनवाणी एक ऐसी नौका है कि जिसके सहारे यह कार्य एकदम सही रूप में सरलता से किया जा सकता है।

पण्डित दौलतरामजी इस बात को बहुत अच्छी तरह जानते थे। इसलिये उन्होंने जिनवचनों से चिपटे रहकर यह महान कार्य पूर्ण निर्भयता के साथ सम्पन्न कर दिखाया है।

मुनिधर्म का स्वरूप स्पष्ट करते समय उनके समक्ष कोई व्यक्ति विशेष नहीं, अपितु जिनवाणी माता थी। किसी व्यक्ति विशेष के लक्ष्य से किये गये कथन में राग–द्वेष की बू आ सकती है; किन्तु जिनवचनों को आधार बनाकर किये गये कथन पूर्णत: निर्दोष होते हैं।

भाग्य की बात है कि उनके प्रत्यक्ष परिचय में कोई मुनिराज नहीं थे; क्योंकि उस समय उनके क्षेत्र में मुनिराजों का समागम ही नहीं था। अत: उन्होंने किसी के लक्ष्य से कुछ कहा होगा ह्न इसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती। मैं भी इस बात का पूरी तरह ध्यान रखूँगा कि किसी व्यक्तिविशेष के लक्ष्य से कुछ न कहा जाय, अपितु जिनवचनों के अनुसार ही प्रतिपादन हो।

मिथ्यात्व और अनन्तानुबन्धी, अप्रत्याख्यानावरण तथा प्रत्याख्यानावरण कषाय के अभाव से उत्पन्न शुद्धपरिणति के धारक सन्तों के सहजभाव से ही २८ मूलगुणों का पालन होता है।

५ महाव्रत, ५ समिति, ५ इन्द्रियविजय, ६ आवश्यक और ७ शेष गुण ह्न इसप्रकार मुनिराजों के कुल २८ मूलगुण होते हैं। इनके अतिरिक्त भी ३ गुप्तियाँ, १० धर्म आदि अनेक गुण होते हैं।

सर्वप्रथम ५ महाव्रतों और ५ समितियों का स्वरूप स्पष्ट करते हुये पण्डित दौलतरामजी लिखते हैं ह्न

षट्काय जीव न हनन तैं, सब विधि दरब हिंसा टरी।
रागादि भाव निवार तैं, हिंसा न भावित अवतरी।।
जिनके न लेश मृषा न जल, मृण हू बिना दीयौ गहैं।
अठदश सहस विधि शीलधर, चिद्ब्रह्ममें नितरमि रहैं।।
अन्तर चतुर्दश भेद बाहिर, संग दशधा तैं टलैं।
परमाद तजि चौकर मही लखि, समिति ईर्ष्या तैं चलैं।।

जग सुहितकर सबअहितहर, श्रुति सुखद सब संशय हरैं।
भ्रम–रोग हर जिनके वचन, मुख–चन्द्र तैं अमृत झरैं।।
छ्यालीसदोष बिनासुकुल, श्रावकतनैं घर अशन को।
लैं तप बढ़ावन हेतु नहिं तन, पोषते तजि रसन को।।
शुचि ज्ञान संयम उपकरण, लखि कैं गहैं लखि कैं धरैं।
निर्जन्तु थान विलोकि तन, मल–मूत्र–श्लेषम परिहरैं।।

मुनिराजों के पृथ्वीकायिक, जलकायिक, अग्निकायिक, वायु–कायिक, वनस्पतिकायिक और त्रसकाय ह्न इन छह काय के जीवों का घात न होने से किसी भी प्रकार की द्रव्यहिंसा नहीं होती और रागादि भावों के निवारण से भावहिंसा भी उत्पन्न नहीं होती।

प्राणों के घात को द्रव्यहिंसा कहते हैं और मोह–राग–द्वेष भावों को भावहिंसा कहते हैं। अहिंसा महाव्रत के धारी मुनिराजों के अपनी भूमिकानुसार द्रव्य और भाव ह्न दोनों प्रकार की हिंसा नहीं होती है; इसलिये ये अहिंसा महाव्रत के धारी हैं।

वे मुनिराज रंचमात्र भी झूठ नहीं बोलते और बिना दिये मिट्टी और जल भी ग्रहण नहीं करते; इसलिये सत्य महाव्रत और अचौर्य महाव्रत के धारी हैं। १८ हजार प्रकार के शील को धारण करनेवाले वे मुनिराज निरन्तर ब्रह्मस्वरूप अपने चेतन आत्मा में रमण करते रहते हैं ह्न यह उनका ब्रह्मचर्य महाव्रत है।

मिथ्यात्व, क्रोध, मान, माया, लोभ, हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, स्त्रीवेद, पुरुषवेद और नपुसंकवेद ह्न ये १४ अंतरंग परिग्रह हैं और धन–धान्यादि १० बहिरंग परिग्रह हैं। मुनिराज उक्त चौबीस परिग्रहों से रहित होते हैं ह्न यह उनका परिग्रहत्याग महाव्रत है।

जब भी परिग्रह या परिग्रहत्याग की चर्चा चलती है ह्न हमारा ध्यान बाह्य परिग्रह की ओर ही जाता है; मिथ्यात्व, क्रोध, मान, माया, लोभादि भी परिग्रह हैं ह्न इस ओर कोई ध्यान ही नहीं देता। क्रोध, मान, माया, लोभ की जब भी बात आयेगी तो कहा जायेगा कि ये तो कषायें हैं; पर कषायों का भी परिग्रह होता है ह्न यह विचार नहीं आता।

जब जगत क्रोध–मानादि कषायों को भी परिग्रह मानने को तैयार नहीं तो फिर हास्यादि कषायों को कौन परिग्रह माने ?

पाँच पापों में परिग्रह एक पाप है और हास्यादि कषायें परिग्रह के भेद हैं। पर जब हम हँसते हैं, शोकसंतप्त होते हैं, तो क्या हम यह समझते हैं कि हम कोई पाप कर रहे हैं या इनके कारण हम परिग्रही हैं ?

बहुत से परिग्रह–त्यागियों को कहीं भी खिलखिलाकर हँसते, हड़बड़ाकर डरते देखा जा सकता है। क्या वे यह अनुभव करते हैं कि यह सब परिग्रह हैं ?

जयपुर में लोग भगवान की मूर्तियाँ लेने आते हैं और मुझसे कहते हैं कि हमें तो बहुत सुन्दर मूर्ति चाहिये, एकदम हँसमुख। मैं उन्हें समझाता हूँ कि भाई ! भगवान की मूर्ति हँसमुख नहीं होती। हास्य तो कषाय है, परिग्रह है और भगवान तो अकषायी, अपरिग्रही हैं; उनकी मूर्ति हँसमुख कैसे हो सकती है ? भगवान की मूर्ति की मुद्रा तो वीतरागी शान्त होती है। कहा भी है ह्न

''जय परमशान्त मुद्रा समेत, भविजन को निज अनुभूति हेत।
एवं
छवि वीतरागी नग्न मुद्रा, दृष्टि नासा पर धरैं।।''

यह भी बहुत कम लोग जानते हैं कि सब पापों का बाप लोभ भी एक परिग्रह है। शब्दों में जानते भी हों तो यह अनुभव नहीं करते कि लोभ भी एक परिग्रह है, अन्यथा यश के लोभ में दौड़–धूप करते तथाकथित परिग्रह–त्यागी दिखाई नहीं देते।

घोर पापों की जड़ मिथ्यात्व भी एक परिग्रह है; एक नहीं, नम्बर एक का परिग्रह है, जिसके छूटे बिना अन्य परिग्रह छूट ही नहीं सकते ह्न इस ओर भी कितनों का ध्यान है ? होता तो मिथ्यात्व का अभाव किये बिना ही अपरिग्रही बनने के यत्न नहीं किये जाते।

इसप्रकार ये पाँच महाव्रत हैं और ईर्यासमिति, भाषासमिति, ऐषणा समिति, आदान–निक्षेपणसमिति और प्रतिष्ठापनासमिति ह्न ये पाँच समितियाँ हैं। **(क्रमशः)**

ब्र.यशपालजी द्वारा धर्म प्रभावना...

ध्रुवधाम (बाँसवाड़ा) : यहाँ श्री आचार्य अकलंक न्याय विद्यालय, ध्रुवधाम में दिनांक 1 से 15 दिसम्बर तक प्रतिदिन ब्र. यशपालजी के प्रातः मोक्षमार्ग प्रकाशक के पहले तथा रात्रि में दूसरे अधिकार के आधार से प्रवचन हुए तथा दोपहर में विद्यार्थियों हेतु 8 वें गुणस्थान से सिद्धावस्था तक के विषय पर विशेष कक्षाएँ ली गई।

ज्ञातव्य है कि बाँसवाड़ा नगर में श्री दिगम्बर जैन चैत्यालय के स्थापना के अवसर पर भी आपका एक प्रवचन हुआ।

स्लिपडिस्क रोगी ध्यान दें !

सम्पूर्ण उपचार बिना दवा, बिना कसरत, बिना चीरफाड, बिना आराम किए विश्व की नवीनतम तकनीक माइक्रो एक्यूप्रेशर द्वारा शीघ्र उपचार।

डॉ. पीयूष त्रिवेदी (मो.) 09828011871

गोल्ड मेडलिस्ट, बी.ए. एम.एस., एम.डी. (एक्यू.)

डिप्लोमा इन योगा, सुजोक (मास्को) एफ.ए.आर.सी. एस. (लंदन)

मेडिनोवा पोली क्लीनिक, केसरगढ, जे.एल.एन. मार्ग, जयपुर

समय : सायं 6 बजे से 9 बजे तक, रविवार को प्रातः 8 से 12 बजे तक

नोट–एक्यूप्रेशर सेवा समिति द्वारा 300 से अधिक निःशुल्क शिविर आयोजित।

अन्य रोग : जोडों का दर्द, गर्दन का दर्द, मोटापा, मायोपैथी, मानस विकृतियां, मधुमेह तथा उच्च रक्तचाप आदि की सफल चिकित्सा।

2 जनवरी 2008, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-064 / 2006-08

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन के आगामी कार्यक्रम

1. फैडरेशन की वेबसाइट को तैयार कराना : इसके अन्तर्गत फैडरेशन की सारी गतिविधियाँ जैसे - सदस्यता फॉर्म, मासिक प्रगति विवरण, शाखा समाचार सभी गतिविधियाँ ऑन लाइन उपलब्ध होंगी। इसके अलावा सामाजिक दायित्व के अन्तर्गत विवाह योग्य युवक-युवतियों की सूची, रोजगार की आवश्यकता एवं उसकी पूर्ति करनेवालों के संपर्क भी वेबसाइट पर उपलब्ध होंगे।

2. राष्ट्रीय स्तर पर तीर्थयात्रा का आयोजन : फैडरेशन इस वर्ष दक्षिण भारत के तीर्थक्षेत्रों की यात्रा का विशाल आयोजन करेगा।

मात्र फैडरेशन के सदस्यों के लिए आयोजित यह यात्रा आवास, भोजन, आवागमन इत्यादि की उच्चस्तर की सुविधाओं से युक्त होगी। इसमें भक्ति, पूजन, प्रवचन इत्यादि कार्यक्रम भी आयोजित किये जाएंगे। इस यात्रा में डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल इत्यादि अनेक विशिष्ट विद्वानों का सानिध्य प्राप्त होगा। इसकी तिथियों, शुल्क एवं विस्तृत कार्यक्रम की जानकारी शीघ्र ही घोषित की जाएगी।

3. ग्रुप शिविरों का आयोजन : ''ग्रुप शिविरों का आयोजन अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन का अनुपम अनुसंधान है।'' ग्रुप शिविरों के अद्वितीय प्रभाव को ध्यान में रखते हुए फैडरेशन द्वारा देशभर में इस वर्ष लगभग 12 ग्रुप शिविरों का आयोजन किया जाना प्रस्तावित है।

4. पत्राचार पाठ्यक्रम में अध्ययन-अध्यापन हेतु सहयोग: श्री वीतराग-विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड द्वारा श्री टोडरमल दिगम्बर जैन मुक्त विद्यापीठ के माध्यम से अनेक पत्राचार पाठ्यक्रमों का संचालन किया जा रहा है, फैडरेशन अपनी सभी शाखाओं के नवयुवकों को इन पाठ्यक्रमों के माध्यम से जैनदर्शन का विधिवत् अध्ययन करने हेतु प्रोत्साहित करेगा।

5. पाठशाला वर्ष का आयोजन : तत्त्वप्रचार के अपने उद्देश्यों की पूर्ति हेतु पाठशालाओं और स्वाध्याय सभा का नियमितरूप से संचालन करना फैडरेशन की महत्वपूर्ण गतिविधि है। पाठशाला समिति ने इस वर्ष को पाठशाला वर्ष के रूप में घोषित किया है, अत: फैडरेशन की सभी शाखाओं को पाठशाला अनिवार्यरूप से संचालित करनी चाहिए। जिन पाठशालाओं के संचालन में शिथिलता आयी है, फैडरेशन की शाखाएँ उन पाठशालाओं को पुन: सक्रियता प्रदान करेंगी।

वैराग्य समाचार.....

1. रतलाम निवासी श्री झमकलालजी बड़जात्या का दिनांक 18 दिसम्बर, 07 को शान्त परिणामों पूर्वक देहावसान हो गया। आप गुरुदेवश्री की उपस्थिति में सोनगढ एवं तत्पश्चात् जयपुर शिविरों में भी नियमित रूप से उपस्थित रहते थे। रतलाम में संचालित होनेवाली तत्त्वज्ञान की गतिविधियों में आपका सक्रिय योगदान तो रहता ही था; इसके अलावा पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा किये जा रहे तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार के कार्यों में उनका एवं उनके परिवार का सदैव सहयोग बना रहता था।

आपकी स्मृति में संस्था को 10 हजार रुपये की राशि प्राप्त हुई।

2.व्हन्नूर निवासी सौ.विशल्या रायचंद दोशी का दिनांक 10 दिसम्बर, 07 को 85 वर्ष की आयु में शान्त परिणामों पूर्वक देहावसान हो गया। स्वामीजी के प्रवचनों का साक्षात् लाभ भी आपको प्राप्त हुआ।

आपकी स्मृति में संस्था को 1002/- रुपये प्राप्त हुए हैं।

दिवंगत आत्मायें शीघ्र ही अभ्युदय को प्राप्त हो ह्न यही भावना है!

प्रशिक्षण-शिविर : मंगलायतन में

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर द्वारा संचालित 42 वाँ आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर इस वर्ष श्री आदिनाथ कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन ट्रस्ट, अलीगढ़ के आयोजकत्व में **रविवार, दिनांक 18 मई से बुधवार, दिनांक 4 जून, 08 तक तीर्थधाम मंगलायतन, अलीगढ़** में लगना निश्चित हुआ है।

इस शिविर में मुख्यरूप से धार्मिक अध्ययन करानेवाले बन्धुओं (अध्यापकों) एवं मुमुक्षु भाईयों को शिक्षण-प्रशिक्षण विधि से प्रशिक्षित किया जायेगा।

आयोजन में वयोवृद्ध विद्वान पण्डित कैलाशचन्दजी और तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल का सान्निध्य एवं प्रवचनों का लाभ तो मिलेगा ही इसके अतिरिक्त अन्य अनेक विशिष्ट विद्वानों से भी सम्पर्क किया जा रहा है। **ह्न अशोक लुहाड़िया,निर्देशक**

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा,** डबल एम.ए.(जैनविद्या व तुलनात्मक धर्मदर्शन; इतिहास), नेट, एम.फिल
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., एम. आई. रोड, जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- ४ बापूनगर, जयपुर - ३०२०१५ (राज.)
फोन : (०१४१) २७०५५८१, २७०७४५८
फैक्स : (०१४१) २७०४१२७